घर में रामु रहे, मूरखु ग़ोल्हे दह दिसा,
जप तप साधन जोग़ में सामी देहि दहे,
नाहकु दुख सहे, थो पुठी डे़ई पाण खे.

महाकवि सामी कहते हैं कि राम (परमेश्वर) तो मनुष्य के घर (हृदय) में रहते हैं किन्तु मूर्ख (अज्ञानी) मनुष्य राम को बाहर दसों दिशाओं में ढूँढता रहता है। अज्ञानी मनुष्य जप, तप, योग आदि साधनाओं द्वारा परमात्मा को पाने का प्रयत्न करता है और इस प्रकार वह अपने शरीर को जलाता रहता है। वह अपने आप से मुख मोड़ कर व्यर्थ ही अनेक दुख सहता रहता है।

संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं- ज्ञानी और अज्ञानी । ज्ञानीजन बुद्धिमान, समझदार, विवेकवान होते हैं। इसके विपरीत जड़, नासमझ, मूर्ख मनुष्य अज्ञानी होते हैं। अध्यात्म या परमार्थ के क्षेत्र में मूर्ख उन मनुष्यों को कहा जाता है जो अज्ञानी होते हैं अर्थात् जिन्हें आत्मबोध नहीं हुआ है। दूसरे शब्दों में, मूर्ख अपने आत्म स्वरूप को नहीं पहचानता है। घर-गृहस्थी अथवा 'देह' को ही सत्य मानकर जीवन जीता रहता है। 'मैं', 'मेरा', 'मैं देह हूँ' मानने वाला मूर्ख होता है। अविद्या या अज्ञान के कारण 'ऐसे मूर्ख मनुष्य असत्य को सत्य समझकर दुख भोगते रहते हैं। वस्तुत: उस परम सत्य को पाने के लिए, परमेश्वर की प्राप्ति के लिए आत्मज्ञान होना आवश्यक है। परंतु मूर्ख जीव आत्मज्ञान के अभाव में परमेश्वर को अपने भीतर न देखते हुए बाहर देखने या ढूँढने का प्रयत्न करते रहते हैं। वे जप, तप/तपस्या, योग आदि साधनाओं के माध्यम से परमेश्वर को पाने का प्रयत्न करते हैं। कबीर के शब्दो में,

मोको कहाँ ढूँढे बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं मंदिर ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलाश में ।।

सामी साहब भी यही बात कहते हैं। परमात्मा हमारे घर (देह शरीर) में ही निवास करता है। वह हमारे भीतर, मन में ही है। बाहर दसों दिशाओं में जा कर परमेश्वर की तलाश करना व्यर्थ है। अत: विवेक द्वारा उसे अपने अंदर ही देखने का प्रयत्न करो। परमेश्वर हर जीव, हर चेतन-अचेतन में व्याप्त है। वह आपके पास ही है। अत: दूर जा कर ढूँढने की जरूरत नहीं है।

कस्तूरी तन में बसै, मृग ढूँढे बन मांहि।
ऐसे घट-घट राम हैं, दुनिया देखे नाहिं ।।

■